विपश्यना

साधकों का
मासिक प्रेरणा पत्र

वार्षिक शुल्क रु. ३०/-
आजीवन शुल्क रु. ५००/-

बुद्धवर्ष 2561, वैशाख पूर्णिमा 10 मई, 2017, वर्ष 46, अंक 11

For online Patrika in various languages, visit: http://www.vridhamma.org/Newsletter_Home.aspx

धम्मवाणी

कुम्भूपमं कायमिमं विदित्वा, नगरूपमं चित्तमिदं ठपेत्वा।
योधेथ मारं पञ्ञावुधेन, जितञ्च रक्खे अनिवेसनो सिया॥
धम्मपदपाळि- ४०, चित्तवग्गो

इस शरीर को घड़े के समान (भंगुर) जान, और इस चित्त को गढ़ के समान (रक्षित और दृढ़) बना, प्रज्ञारूपी शस्त्र के साथ मार से युद्ध करे। (उसे) जीत लेने पर भी (चित्त की) रक्षा करे और अनासक्त बना रहे।

शुद्ध धर्म का प्रसार और उसे जीवित रखने का संकल्प

*(धम्म विमुत्ति, कुशीनगर (उ.प्र.) की धर्म-यात्रा के दौरान पुराने साधकों के लिए पूज्य गुरुजी का प्रवचन- **'विपश्यना'**- अप्रेल, 2017, अंक 10 से आगे, ... क्रमशः)*

मेरे प्यारे विपश्यी साधक-साधिकाओ!

... भगवान बुद्ध की सारी शिक्षा उनके समय ही बाहर गयी, लेकिन लगभग २५०-२७५ वर्ष बाद जब अशोक सम्राट हुआ, और उसके गुरु "मोग्गलिपुत्त तिस्स थेर" ने तीसरा संगायन किया, तब उसने भारत के बाहर धर्मदूत भेजे, यानी, स्थान-स्थान पर ऐसे अरहंत भेजे, जिनको सारी वाणी कंठस्थ थी और उसके साथ-साथ यह विपश्यना ज्ञान, यह विद्या जगह-जगह भेजी गयी, तो बर्मा भी गयी। भारत का बड़ा दुर्भाग्य हुआ कि ५०० बर्ष बीतते-बीतते, आपसी झगड़ों को ले करके और कुछ अन्य कारणों से भी यह विद्या यहां पर लुप्त हो गयी -- विपश्यना भी और वाणी भी। हम बहुत उपकार मानते हैं - सम्राट अशोक का और "मोग्गलिपुत्त तिस्स थेर" का; यदि उन्होंने यह विद्या बाहर नहीं भेजी होती तो यह सदा के लिए नष्ट हो जाती। हमें कैसे मिलती? इसका लाभ दुनिया में किसी को न मिलता। जिन देशों में गयी उनमें से पांच देशों ने वाणी को कायम रखा। अब ये पांच देशों के लोग इकट्ठे होते हैं। सबके उच्चारण भिन्न-भिन्न परंतु पालि वही है। सबकी लिपि भिन्न-भिन्न पर मामूली अंतर; कहीं छोटी "इ" की मात्रा या बड़ी "ई" की मात्रा। यों छोटी-मोटी भिन्नता परंतु ऐसा नहीं कि मूल वाणी में परिवर्तन आ जाय। इतने बर्षों तक संभाल कर रखा कि ओथेंटिक हुई। इससे यह विश्वास होता है कि सचमुच यह बुद्ध वाणी है। इन्होंने नहीं संभाल कर रखा होता तो हमें कैसे प्राप्त होती? यह विपश्यना विद्या भी सभी जगह गयी परंतु नष्ट हो गयी, बर्मा ने संभाल कर रखा, इसलिए उनका उपकार मानते है।

अपने यहां और बाहर भी ऐसी मान्यता है, या किसी संत ने भविष्य वाणी की थी कि यह जो रत्न बर्मा (स्वर्णभूमि) भेजा जा रहा है, (बर्मा में बहुत सोना होता था उन दिनों इसलिए उसे स्वर्णभूमि कहते थे), वही इस अनमोल रत्न को (स्वर्ण को) संभाल कर रखेगा। बाकी सारे देशों में नष्ट हो जायगा। २५०० वर्ष पूरे होने पर यह विद्या, यह रतन फिर अपने उद्गम के देश यानी, भारत देश में आयगा। यहां के लोग बड़ी प्रसन्नता से उसे स्वीकार करेंगे, यहां स्थापित होगा, फिर सारे विश्व में फैलेगा। सारे विश्व के लोग इसे स्वीकार करेंगे।

यह वाणी और विद्या इस तरह क्यों रखी गयी उसका एक कारण है। "सुभद्र" नाम का वह भिक्षु जिसने पागलपन में यह घोषणा की कि अच्छा हुआ, वह बूढ़ा मर गया... । यदि वह ऐसा न कहता तो शायद कोई सोचता भी नहीं कि इस वाणी को कायम रखें, अन्यथा इस तरह के लोग बिगाड़ देंगे। तो उसका भी उपकार मानते हैं, अच्छा किया उसने। बहुत बड़ी घटना घटी। और सबसे बड़ी बात यह कि इसके बाद किस तरह से लोगों ने भले ५०० वर्ष ही, पर इसे संभाल कर रखा। इस देश में कितनों का कल्याण हुआ, कितनों का कल्याण हुआ।

हमारे सामने प्रमाण हैं इस बात के कि इस विद्या से देश को कितना बड़ा लाभ हुआ। सम्राट अशोक एक शिलालेख में लिखता है, मेरे पहले कितने राजा हुये, कितने सम्राट हुये जो सब चाहते थे कि हमारी प्रजा में धर्म जागे। लोग बहुत शांति का जीवन जीयें, धर्म का जीवन जीयें, बड़ों का सम्मान करें, छोटों से प्यार करें, खूब दान देने की भावना हो आदि.., लेकिन कोई राजा सफल नहीं हुआ। चाहते सब थे, कोई सफल नहीं हुआ। फिर कहता है - मैं सफल हुआ। झूठ नहीं बोलता। झूठ बोलता तो उसका शिलालेख तोड़ कर फेंक देते लोग। इतने वर्षों तक कायम रहा न! इसीलिए कहता है मैं सफल हुआ। क्यों सफल हुआ? एक तो उसने धर्मामात्य नियुक्त किये। अमात्य मतलब मंत्री; धर्म के मंत्री माने धर्म सिखाने वाले लोग; राज्य की ओर से धर्म सिखाने वाले लोग जगह-जगह जाकर धर्म सिखाते और इस बात को देखते कि लोग समझ रहे हैं कि नहीं? उनको धर्म पालन करने में क्या कठिनाई है? एक तो यह कारण रहा; फिर कहता है -- अरे, यह तो बहुत छोटा-सा कारण था। इन उपदेशों से कौन बदलता है? थोड़ी देर बदलेगा, फिर वैसा का वैसा। मेरी सफलता का मूल कारण यह कि मैंने लोगो को ध्यान करना सिखाया, विपश्यना करनी सिखायी। आश्चर्य है, करोड़ों की आबादी वाला देश। कैसे यह विद्या फैलायी गयी? कैसे विद्या सिखायी गयी?

अब फिर समय आया, कोई न कोई रास्ता ऐसा निकलेगा कि यह विद्या सारे देश में फैलेगी और बहुत बड़ा कल्याण होगा, तो हमारे लिए बहुत बड़ी प्रेरणा की बात हुई कि यह विद्या कायम है। विपश्यना भी कायम है; वाणी भी कायम है। कहीं न कहीं कायम रहती है, सारे ब्रह्मदेश में नहीं रही। परंतु बहुत थोड़े से लोगों ने, गुरु-शिष्य परम्परा से संभाल कर रखा। बाकी लोग ऐसे ही अपने कर्म-कांडों में उलझे

हुये, और भिन्न-भिन्न मान्यताओं में उलझे हुये, जैसे होता है संसार में, लोक चक्र ऐसे ही चलता है। जिन थोड़े से लोगों ने संभाल कर रखा उनका बड़ा उपकार मानते हैं। इस स्थान का बहुत बड़ा महत्त्व कि यहां इस महापुरुष ने इतनी लंबी यात्रा का अंत किया, कितने जन्मों की यात्रा, और वह यात्रा यहां आकर समाप्त हुई। **"नत्थिदानि पुनब्भवोति"**- अब मेरा पुनर्जन्म नहीं होगा। मुक्त हो गये। इसके पहले इतना काम कर गये, इतना काम कर गये कि करोड़ों लोगों का कल्याण हुए जा रहा है, होता ही जायगा। इस माने में इस स्थान का बहुत बड़ा महत्त्व है।

अभी मैंने कहा कि तीन महीने पहले उन्होंने यह भविष्य वाणी कर दी थी कि तीन महीने के बाद जो वैशाख पूर्णिमा आ रही है, उस रात के समाप्त होने पर मैं अपना शरीर त्यागूंगा। उस समय एक प्रश्न उठा कि ये जो धर्म-विरोधी शक्तियां हैं, वे हमेशा चाहती हैं कि किसी तरह से यह धर्म आगे नहीं बढ़े, तो उनका जो प्रमुख होता है, उसे "मार" कहा जाता है। जब ये सम्यक संबुद्ध बने तब बड़े प्रयत्न किये उसने कि यह संबुद्ध न बन पाय। वह चाहता है कि लोग इसी चक्र में पड़े रहें। बहुत हो तो देवलोक में चले जायं, अरे वहां पर ऐसा आनंद है, ऐसा आनंद... लोग उसमें पड़े रहें। यह-यह करो, तुमको देव लोक मिलेगा। लोग उसमें खुश रहें। किसी को उससे खुशी नहीं तो अच्छा ब्रह्मलोक! ऐसा ध्यान करो तो ब्रह्मलोक मिल जायगा। वह इसी चक्कर में लोगों को लगाये रखना चाहता है। सारे लोकों के परे चला जाय, जहां से पुनर्जन्म नहीं हो, वह उसे पसंद नहीं। तो जैसे ही सम्यक संबुद्ध बने तो कहता है कि आप मुक्त हो गये, अब छोड़ो इस जंजाल को। लोगों को सिखाने की बात क्यों करते हो? अरे, नहीं, मैं इसलिए सम्यक संबुद्ध नहीं बना हूं। वे सिखाते गये, सिखाते गये। एक बार अवसर आया, उनसे आकर कहता है कि अब तो बहुत लोग सीख गये, आपके बहुत शिष्य हो गये, अब तो परिनिर्वाण ले लो। वह कहता है नहीं, चार तरह के संघ हैं - भिक्षु संघ है, भिक्षुणी संघ है, और गृहस्थों में उपासक संघ, उपासिका संघ। जब ये चारों के चारों संघ, न केवल स्वयं धर्म में परिपुष्ट होंगे, बल्कि चारों के चारों, जब लोगों को धर्म सिखाने के लायक हो जायँगे, और मुझे विश्वास हो जायगा कि ये चारों के चारों धर्म सिखा सकती हैं, सिखा रहे हैं, तब परिनिर्वाण लूंगा। तो वैशाली में परिनिर्वाण के तीन महीने पहले वह फिर आता है, अब तो महाराज! बहुत लोग तैयार हो गये न आपके। बहुत भिक्षु भी तैयार हो गये, जो स्वयं भी पक गये, लोगों को भी सिखा सकते है। बहुत भिक्षुणियां तैयार हो गयीं, स्वयं भी पक गयीं, औरों को सिखा सकती हैं। और देखिये गृहस्थों में भी कितने तैयार हो गये, स्वयं भी पक गये, औरों को सिखा सकते हैं, और गृहस्थ उपासिकाओं में भी कितने पक गये, स्वयं भी पक गये, औरों को भी सिखा सकती हैं। तब वे कहते हैं - बात तो ठीक है भाई! अच्छा, आज के तीन महीने बाद परिनिर्वाण लूंगा।

इससे एक बात स्पष्ट हुई कि चारों के चारों संघ पके हुए थे। यह दुर्भाग्य की बात हुई कि कुछ समय के बाद जो गृहस्थ थे, बस कोई अपना व्रत कर लिया, थोड़ा-सा ध्यान कर लिया, उसी में लग गये। गृहस्थ आचार्य बहुत गिनती के रह गये। यह तो लगभग १०० वर्ष पहले ऐसी अवस्था आयी कि हमारे बड़े दादा गुरुजी--"लैडी सयाडो", बड़े दूरदर्शी थे। उन्होंने देखा-- १०० वर्ष बाद, २५०० वर्ष पूरे होंगे भगवान बुद्ध के, तब यह विद्या भारत जायगी, और भारत में स्थापित होने के बाद सारे विश्व में फैलेगी। वे भारत आये, यहां की स्थिति देखी तो एक बात उनकी समझ में आयी कि आज भारत की यह अवस्था है कि अगर कोई संन्यासी, कोई भिक्षु वहां जा करके बुद्ध की शिक्षा सिखायेगा तो अरे, यह तो बौद्ध धर्म है, बौद्ध धर्म है। लोगों में ऐसा एक पागलपन सवार है कि यह बौद्ध धर्म हमारे काम का नहीं है। कोई सुनेगा ही नहीं, पालन करना तो बहुत दूर। वे बड़े दूरदर्शी थे। देखा कि कोई गृहस्थ जायगा तो ही बात बनेगी। उसके बाद समय आयेगा कि सब सिखाने लगेंगे, पर पहले तो कोई गृहस्थ जाय, और गृहस्थों में अभी तक कोई आचार्य नहीं, तो मुझे गृहस्थ आचार्य तैयार करना है। अतः लगभग १००-१२५ वर्ष पहले उनके मन में यह बात आयी। बड़ा उपकार मानते हैं कि उन्होंने गृहस्थों के लिए दरवाजा खोला-- तुम भी विपश्यना सीखो। लोग विपश्यना सीखने लगे। बहुत थोड़े लोग, सीखने लगे। और उन्हीं में से एक ऐसे आदर्श गृहस्थ आचार्य हुये -- "सया तै जी", जिन्होंने एक आदर्श स्थापित किया - जो गृहस्थ आचार्य होंगे, वे कैसे होंगे? कैसा जीवन होगा? और उनके शिष्य मेरे धर्म-पिता "सयाजी ऊ बा खिन" हुए, जो इतने संत, इतने संत।

तो यह परम्परा गृहस्थों की होने के कारण भारत ने यह विद्या स्वीकार की। इसका अर्थ यह नहीं है कि भिक्षु लोग सिखा ही नहीं सकते, भारत के लोगों की ऐसी मानसिकता है, उनमें इतनी भ्रांतियां कि मैं स्वयं भी इन भ्रांतियों का शिकार हुआ। ३१ वर्ष की उम्र में जब यह विद्या मिली मुझे तब देखा कि इसमें कोई खोट ही नहीं। यह इतनी निर्दोष, इतनी निष्कलंक और इतनी कल्याणकारी है, फिरभी हमारे यहां इसके खिलाफ दुनिया भर की फिजूल बातें क्यों होती है? उनकी वाणी का अध्ययन किया, तो देखा भाई! या तो नासमझी से बहुत-सी बातें उनकी शिक्षा के खिलाफ अपने देश में फैलीं, या किसी आपस के झगड़े को ले करके बेबुनियाद की बातें फैलायी गयीं। जिन बातों का वे लांछन लगा रहे हैं, उसकी कोई बुनियाद नहीं।

अपने यहां कहावत है- बढ़ाते-बढ़ाते- तिल का ताड़ कर दिया, राई का पर्वत कर दिया। मैंने जब अध्ययन करके देखा तो अरे, यहां तो कोई तिल भी नहीं, ताड़ कैसे हो गया? यहां तो राई भी नहीं, पर्वत कैसे हो गया? तो भाई! अपना दुर्भाग्य रहा कि इतने वर्ष हम इससे वंचित रहे। अच्छा हुआ कि फिर आयी है, लोगों ने स्वीकार किया है। जो लोग नहीं आ पाते हैं, उनको भ्रांतियां हैं, लेकिन जब आते हैं तो देखते हैं - अरे, इतना शुद्ध! कहीं अंगुली टिकाने को जगह नहीं कि इस बात में खोट है। अरे, शील-सदाचार का पालन करना सीखें, उसमें खोट क्या है? संसार की कोई ऐसी धर्म-परम्परा नहीं जो शील-सदाचार का विरोध करे। ये शील-सदाचार का पालन करना सिखाते हैं, और उसका पालन करने के लिए मन को वश में करना सिखाते हैं। कौन विरोध करेगा? और मन को वश में करने के लिए जो आलंबन है वह सांस का है। जो सबके लिए एक जैसा है। हर एक उसका अभ्यास कर सकता है। और केवल मन को वश में करना ही नहीं, मन को जड़ों तक निर्मल करना है। ऐसा करने के लिए प्रज्ञा सिखाते हैं। शरीर और चित्त के पारस्परिक संबंधों से किस प्रकार विकार जागते हैं संवेदनाओं के आधार पर, और किस प्रकार संवेदनाओं के आधार

पर विकार निकाले जा सकते हैं। सब स्वीकार करते हैं। हिंदू हो, मुस्लिम हो, बौद्ध हो, जैन हो, ईसाई हो, कुछ फर्क नहीं पड़ता। भारतीय हो, पाकिस्तानी हो, अंग्रेज हो, अमेरिकन हो, कुछ फर्क नहीं पड़ता। आदमी-आदमी है, सबका स्वभाव एक जैसा होता है। कैसे अपने स्वभाव को पलट दें और अच्छा जीवन जीने लगें - सब स्वीकार करते हैं। इन तीन बातों को छोड़ करके उस आदमी ने और कुछ नहीं सिखाया। उसके मत्थे कितनी बातें जोड़ दी गयीं, कितनी बातें जोड़ दी गयीं। अच्छा हुआ, अब धीरे-धीरे लोगों की समझ में आ रहा है, वे निकम्मी बातें, जिनको ले करके देश दो हजार वर्षों तक वंचित रहा, वह अब स्वीकार कर रहा है, बड़ी अच्छी बात। यहीं पर वह सुभद्र नाम का व्यक्ति, जिसके मन में यह इच्छा जागी कि भगवान से यह विद्या सीखूं। अच्छी बात, उसका अपना कल्याण हुआ। लेकिन दूसरा वह "सुभद्र" जो कहता है कि अच्छा हुआ कि बूढ़ा मर गया, अब हम मुक्त हो गये हैं, जो चाहें सो करेंगे। उसकी वजह से यह सारी विद्या कायम रखी गयी, परियत्ति भी, पटिपत्ति भी, माने वाणी भी और विपश्यना विद्या भी, दोनों कायम रही और हमारा बहुत बड़ा कल्याण हुआ। इस माने में इस स्थान का अपना एक बहुत बड़ा महत्त्व है। इस महत्त्वपूर्ण स्थान पर ध्यान करके हम अपना मंगल साध लें!

भवतु सब्ब मंङ्गलं, भवतु सब्ब मंङ्गलं, भवतु सब्ब मंङ्गलं।

(साधु, साधु, साधु।) सुखी हों! सुखी हों!

(कुछ देर विश्राम कर लें और उसके बाद मंदिर के समीप जा करके ध्यान करेंगे।)

सबका मंगल, सबका मंगल, सबका मंगल होय रे,
तेरा मंगल, तेरा मंगल, तेरा मंगल होय रे!
शुद्ध धरम धरती पर जागे, शुद्ध धरम धरती पर जागे,
पाप तिरोहित होय रे, पाप तिरोहित होय रे!
जन-मन के दुखड़े मिट जायें, जन-मन के दुखड़े मिट जायें,
जन-मन हर्षित होय रे,!
सबका मंगल, सबका मंगल, सबका मंगल होय रे!

कल्याणमित्र,
सत्यनारायण गोयन्का.

पगोडा पर रात भर रोशनी का महत्त्व

पूज्य गुरुजी बार-बार कहा करते थे कि किसी धातु-पगोडा पर रात भर रोशनी रहने का अपना विशेष महत्त्व है। इससे वातावरण धर्म एवं मैत्री-तरंगों से भरपूर रहता है। सगे-संबंधियों की याद में ग्लोबल पगोडा पर रोशनी-दान के लिए प्रति रात्रि रु. ५०००/- निर्धारित किये गये हैं। अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें--

1. Mr. Derik Pegado, 9921227057. or 2. Sri Bipin Mehta, Mo. 9920052156, Email: audits@globalpagoda.org

---

पालि की प्रारंभिक शिक्षा तथा सघन डिप्लोमा पाठ्यक्रम व बुद्ध-शिक्षा का प्रतिपादन

विपश्यना विशोधन विन्यास तथा दर्शन विभाग, मुंबई विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान में २०१७-१८ में एक वर्ष का डिप्लोमा पाठ्यक्रम होगा जिसका विषय होगा बुद्ध की शिक्षा का सैद्धान्तिक तथा प्रायोगिक पक्ष विपश्यना का जीवन में उपयोग। आवेदन पत्रः ३ जुलाई से ८ जुलाई, २०१७ तक (रविवार को छोड़कर) ११ बजे से २ बजे के बीच, दर्शन विभाग, ज्ञानेश्वर भवन, मुंबई विश्व विद्यालय, विद्यानगरी, कालीना कॅम्पस, सांताक्रुज (पू.) मुंबई- ४०००९८, टेलि.: ०२२-२६५२७३३७ से प्राप्त किया जा सकता है। **पाठ्यक्रम की अवधिः** १५ जुलाई २०१७ से मार्च २०१८ तक, प्रत्येक शनिवार को २:३० बजे से ६:३० शाम तक, **योग्यताः** आवेदक कम से कम १२-वीं कक्षा उत्तीर्ण हों। उनके लिए दीवाली की छुट्टी में एक दस-दिवसीय विपश्यना शिविर करना अनिवार्य होगा। **अधिक जानकारी के लिए–** (१) विपश्यना विशोधन विन्यास, ग्लोबल पगोडाः कार्यालय ०२२-३३७४७५६०, (२) श्रीमती अलका वेंगुर्लेकर - ९८२०५८३४४०.**(३)** Mrs. Archana Deshpande - 9869007040.

आवश्यकता है

धम्मरत, रतलाम विपश्यना केंद्र पर पुराने अनुभवी साधक की पूर्णकालिक केंद्र व्यवस्थापक (उचित मानदेय भी दिया जा सकेगा) के रूप में आवश्यकता है। इच्छुक साधक रतलाम विपश्यना केंद्र पर ईमेल- dhamma.rata@gmail.com / या मो. फोन - ०९८२७५६१६४९ पर संपर्क कर सकते हैं।

विपश्यना पत्र के स्वामित्व आदि का विवरण

समाचार पत्र का नाम : **"विपश्यना"**
भाषा : **हिंदी**
प्रकाशन का नियत काल : **मासिक (प्रत्येक पूर्णिमा)**
प्रकाशन का स्थान : विपश्यना विशोधन विन्यास, धम्मगिरि, इगतपुरी-४२२४०३.
मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक का नाम : राम प्रताप यादव
राष्ट्रीयता : भारतीय
मुद्रण का स्थान : अपोलो प्रिंटिंग प्रेस, ६९ एम.आय.डी.सी, सातपुर, नाशिक-७.
पत्रिका के मालिक का नाम : विपश्यना विशोधन विन्यास, (रजि. मुख्य कार्यालय): ग्रीन हाऊस, २रा माला, ग्रीन स्ट्रीट, फोर्ट, मुंबई-४०००२३.

मैं, राम प्रताप यादव एतद् द्वारा घोषित करता हूं कि ऊपर दिया गया विवरण मेरी अधिकतम जानकारी और विश्वास के अनुसार सत्य है।

राम प्रताप यादव,
मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक
दि. २४-०४-२०१७.

नये उत्तरदायित्व

वरिष्ठ सहायक आचार्य

१. श्रीमती हेमलता दीक्षित, मुंबई

नव नियुक्तियां

सहायक आचार्य

१. श्रीममती पार्वती रंगारी, नाशिक
२. श्री मंगल नाहर, चेन्नई
३. श्रीमती गिरिजा नातू, पुणे
४. श्रीमती स्मिता कामदार
५. श्री मधुकर क्षीरसागर, चंद्रपुर
6. Miss. Hui Liu, China
7. Ms. Chao Yu Lai, Taiwan
8. U Chit Swe, Myanmar

बालशिविर शिक्षक

1. श्रीमती नेहा बेडेकर ठाणे, मुंबई
2-3. श्री बापू एवं श्रीमती सुषमा सालुंके, जळगांव
4-5. श्री विजय एवं शीमती प्रमोदिनी कांबले, जळगांव
6. शीमती महालक्ष्मी एम, पुणे
7. श्री शशिकांत सुतार, जळगांव

क्षेत्रीय बालशिविर संयोजक
(New RCCC)

1. RCCC East Africa, Ms Arsema Andargatchew
२. पुणे क्षेत्र के अतिरिक्त क्षे. बा. संयोजक- श्री कपिल धत्तिंगण

Registered No. NSK/235/2015-2017

आवासीय अभिधम्म कार्यशाला : मई १५ से १९, २०१७.

स्थान : विपश्यना विशोधन विन्यास, गोराई, मुंबई.

उपरोक्त कार्यक्रम के लिए पात्रता तथा अन्य जानकारी के लिए - http://www.vridhamma.org/Theory-And-Practice-Courses इस शृंखला का अनुसरण करें.

संपर्क : VRI office : 022- 28451170 / 28451204 Extn.560, (9:30 AM to 5:30 PM) E-mail: mumbai@vridhamma.org

ग्लोबल विपश्यना पगोडा में २०१७ के एक-दिवसीय महाशिविर

रविवार, १४ मई को बुद्ध पूर्णिमा के उपलक्ष्य में; **रविवार, ९ जुलाई आषाढ़ पूर्णिमा** (धर्मचक्र प्रवर्तन); तथा रविवार, **१ अक्टूबर शरद पूर्णिमा** एवं **पूज्य गुरुजी की पुण्यतिथि के** उपलक्ष्य में। **समयः** प्रातः ११ बजे से अपराह्न ४ बजे तक* ३ बजे के प्रवचन में बिना साधना किये लोग भी बैठ सकते हैं। बुकिंग के लिए कृपया निम्न फोन नंबरों या ईमेल से शीघ्र संपर्क करें। कृपया बिना बुकिंग कराये न आयें और **समग्गानं तपो सुखो-** सामूहिक तप-सुख का लाभ उठाएं।

संपर्कः 022-28451170, 022-62427544, 8291894644 - Extn. 9,

(**फोन बुकिंग : ११** से **५** बजे तक, प्रतिदिन)

Online Regn.: www.oneday.globalpagoda.org

पगोडा परिसर में धर्मसेवकों तथा साधकों के लिए
निःशुल्क आवास-सुविधा

प्रत्येक वर्ष ''विश्व विपश्यना पगोडा'', गोराई- बोरीवली (मुंबई) में एक दिवसीय महाशिविरों का आयोजन होता रहता है। उनमें शामिल होने के लिए दूर-दूर से लोग आते हैं। परंतु दुर्भाग्य से वहां उनके रात्रि-विश्राम की कोई समुचित सुविधा नहीं है। अतः योजना है कि पगोडा-परिसर में अलग से एक ३-४ मंजिला भवन का निर्माण किया जाय जिसमें कुछ स्थायी धर्मसेवकों के अतिरिक्त बड़ी संख्या में आने वाले साधकों के लिए कुछ एकाकी और कुछ सामूहिक निवास की व्यवस्था की जा सके ताकि रात्रि-विश्राम के बाद वे सुबह आराम से उठ कर भली प्रकार साधना का लाभ उठा सकें। तदर्थ जो भी साधक-साधिका इस पुण्यकार्य में भागीदार होना चाहें, वे निम्न पते पर संपर्क करें:-

1. Mr. Derik Pegado, 9921227057. or
2. Sri Bipin Mehta, Mo. 9920052156,
   Email: audits@globalpagoda.org

दोहे धर्म के

काया चित्त प्रपंच से, विविध वेदना होय।
निर्विकार निरखत रहें, बुद्ध वंदना सोय॥
देख सुखद संवेदना, आस्वादन ना होय।
भय देखें सुख स्वाद में, बुद्ध वंदना सोय॥
देख दुखद संवेदना, द्वेष न जाग्रत होय।
भय देखें जब द्वेष में, बुद्ध वंदना होय॥
राग द्वेष जागे नहीं, क्षीण अविद्या होय।
प्रज्ञामय समता जगे, बुद्ध वंदना सोय॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा०) लिमिटेड
८, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड़, वरली, मुंबई- ४०० ०१८
फोनः २४९३ ८८९३, फैक्सः २४९३ ६१६६
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धर्म रा

धरती पर फिर उमड़सी, धरम गंग री धार।
प्यास बुझासी जगत री, करसी जन उद्धार॥
बेवै धरा पर धरम री, फिर रसवंती धार।
रूखा सूखा चमन फिर, हो ज्यावै गुलजार॥
देख दुखी करुणा जगै, देख सुखी मन मोद।
सैं रै प्रति मैत्री जगै, रवै धरम रो बोध॥
द्रोही छोडै द्रोह नै, द्वेसी छोडै द्वेस।
क्रोधी छोडै क्रोध नै, मिटै चित्त रा क्लेस॥

मोरया ट्रेडिंग कंपनी
सर्वो स्टॉकिस्ट-इंडियन ऑईल, ७४, सुरेशदादा जैन शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, एन.एच.६, अजिंठा चौक, जलगांव - ४२५ ००३, फोन. नं. ०२५७-२२१०३७२, २२१२८७७
मोबा.०९४२३१८७३०१, Email: morolium_jal@yahoo.co.in
की मंगल कामनाओं सहित

'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादकः राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी- ४२२ ४०३, दूरभाष : (०२५५३) २४४०८६, २४४०७६.
मुद्रण स्थान : अपोलो प्रिंटिंग प्रेस, जी-२५९, सीकॉफ लिमिटेड, ६९ एम. आय. डी. सी, सातपुर, नाशिक-४२२ ००७. **बुद्धवर्ष २५६१, वैशाख पूर्णिमा, १० मई, २०१७**

वार्षिक शुल्क रु. ३०/-, US $ 10, आजीवन शुल्क रु. ५००/-, US $ 100. 'विपश्यना' रजि. नं. 19156/71. Postal Regi. No. NSK/235/2015-2017

Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422 403,** Dist. Nashik (M.S.)

DATE OF PRINTING: 1 MAY, 2017, DATE OF PUBLICATION: 10 MAY, 2017

If not delivered please return to:-
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - ४२२ ४०३
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (०२५५३) २४४०७६, २४४०८६, २४३७१२, २४३२३८. **फैक्स :** (०२५५३) २४४१७६
Email: vri_admin@dhamma.net.in;
course booking: info@giri.dhamma.org
Website: www.vridhamma.org